UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654

नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 10, अंक : 2, दिसंबर 2022

हरियाणवी सांग के संदर्भ में पंडित मानसिंह की शिष्य परम्परा का योगदानः एक विश्लेषण

लेखक

श्याम लाल

शोधार्थी, संगीत एवं नृत्य विभाग,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

सहायक लेखक

प्रो. शुचिस्मिता शर्मा

संगीत एवं नृत्य विभाग,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

Paper received on : July 30, October 14, October 18, Accepted on November 6, 2022

सार-संक्षेप

हरियाणा में साँग का आरम्भ लगभग 1730 ई. में माना गया। 'साँग' हरियाणा की नाट्य-परम्परा का सिरमौर है, जिसे यहाँ का कौमी नाटक भी कहा जा सकता है। इस विद्या में हरियाणा के पंडित लख्मीचंद का नाम बड़े ही सम्मान से लिया जाता है। उन्हें 'साँग सम्राट' तथा हरियाणा का 'सूर्यकवि' कहा जाता है। साँगी पं. मानसिंह जी बड़े दूरदर्शी एवं साँग कला के पण्डित थे। वे अपने साँगीत में हर प्रकार के भावों की सशक्त अभिव्यक्ति करते थे। कोई भी विधा तब तक जीवित रहती है जब तक उसके लिए परम्परागत रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी कई कलाकार निरन्तर प्रयासरत रहते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र लिखने का उद्देश्य यह है कि किस प्रकार यह जानने का प्रयास किया जाए कि सांग विद्या का हरियाणा में प्रारम्भ कैसे हुआ और उसकी परम्परा का निर्वहन किन कलाकारों ने किया। विशेषरूप से पंडित मानसिंह एवं उनकी शिष्य परम्परा के योगदान का विश्लेषण करना भी है। प्रस्तुत शोध-पत्र के विषय सम्बन्धी प्रदत्त संकलन हेतु ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। ऐतिहासिक शोध प्रबंध की सहायता से पंडित मानसिंह की गेय प्रणाली संबंधी सूचनाएँ एकत्रित की गई हैं तथा वर्णनात्मक प्रविधि की सहायता से इन सूचनाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में प्राथमिक एवं माध्यमिक स्रोतों से आँकड़े प्राप्त करके यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि हरियाणा की सांग परम्परा को पंडित मानसिंह ने आधार प्रदान किया तथा इसके पश्चात पंडित लख्मीचंद तथा अन्य शिष्यों ने उसकी वैभवता को प्रचारित-प्रसारित किया।

मूल शब्द–

शोध-पत्र

भूमिका

नाट्यकला मानव जाति की प्राचीनतम कला है। आपसी हेलमेल, धार्मिक अनुष्ठान, मेले-ठेले, वार-त्यौहार, फसल के आरम्भ तथा समाप्ति का सुख आदि लोकांतरन के ऐसे मूलभूत बिन्दू हैं, जिनसे लोकनाट्य की अन्तःसलिला प्रस्फुटित होती है। ''लोकनाट्य की उत्पति लोक विश्वास, लोक प्रचलित, धार्मिक रूढ़ियाँ, जन परम्पराएँ, वीर-पूजा, मनोरंजन, उत्सव मांगलिक पर्व तथा शोक के अवसरों आदि धारणाओं के बीच हुई है।'' [1] साँगीत, साँग या स्वाँग को हरियाणा का 'लघु नाट्य' भी कहा जा सकता है। स्वाँग का अर्थ है–भेष भरना, रूप भरना या नकल करना। हरियाणा प्रदेश में 'साँग भरना' एक लोकोक्ति भी प्रचलित है। जिसका अर्थ होता है–'रूप भरना या रूप बनाना'। वास्तव में 'स्वाँग' वह रूप बनाना कहलाता है जब प्रयत्न करने पर भी रूप का यथातथ्य आरोपण न हो सके और पात्र में विकृति आ जाए। [2]

हरियाणवी साँग के संवर्धन में कलाकारों का योगदान

पण्डित मानसिंह का जन्म सन 1885 में गाँव बासौदी जिला सोनीपत में हुआ था। इनके गुरु श्री मुआसी नाथ थे। मानसिंह अशिक्षित तथा जन्म से अन्धे थे। ये जीवन भर ब्रह्मचारी बने रहे। अशिक्षित होते हुए भी इन्हें परमज्ञानी माना जाता था। वे घोड़ी पर सवार होकर एक गाँव से दूसरे गाँव जाकर भजन किया करते थे। बाद में उन्होंने लगभग 10 साँगों की रचना की, जो लगभग लुप्त हो गए हैं। जैसे–मदनपाल, प्रभावती,

राजा हरीशचन्द्र, सत्यवान-सावित्री तथा नल दमयन्ती आदि। उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम समय में भजनोपदेश ही किया। मानसिंह जी बड़े दूरदर्शी थे।[3] पंडित मानसिंह तथा उनकी साँग प्रणाली के सभी साँगीतकों ने अपने अथक प्रयासों से साँग कला को ओर अधिक उन्नत तथा संशोधित बनाया। उन्होंने साँग के सभी पक्षों जैसे–रचना, प्रदर्शन पद्धति, गायन शैली आदि में सकारात्मक बदलाव किए। उन्होंने अपनी रागनियों में लोक-संगीत तथा शास्त्रीय-संगीत के अंतर्सम्बंध को बखूबी दर्शाया है। सांसारिक क्षणभंगुरता आधारित पंडित मानसिंह की निम्न रागिनी की रचना शैली अति सुन्दर है–

जगत सै यो रैन का सपना रे, ना तू किसेका, ना कोई तेरा।
सबनै समान समझ, घर तेरा, चिड़िया कैसा रैन बसेरा,
जिसनै तू सोचता अपनारै।।
काल अचानक मारै छन में, सब रहज्या तेरे मन की मन मैं,
मानसिंह चौथे-पन में, चाहिए ओम नाम जपना।[4]

पंडित लख्मीचन्द का योगदान

मानसिंह जी की साँग परम्परा को आगे चलाने का कार्य हरियाणा के कविसूर्य पंडित लख्मीचंद को जाता है, जो मानसिंह जी के पट्ट शिष्य थे। पंडित लख्मीचंद जी स्वयं तो पढ़ न सके, परन्तु उन्होंने गाँव खटकड़ में संस्कृत पाठशाला की स्थापना की। उन्होंने अपने साँग मंचन द्वारा अर्जित धन से अनेक कुएँ, तालाब, मन्दिर और गौशाला आदि बनवाने में सहयोग दिया। पंडित लख्मीचंद बीसवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध के अत्यंत लोकप्रिय साँगी थे। उन्हें साँग को लोकप्रियता की चरमसीमा पर पहुँचाने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने साँग को हरियाणवी जनता के दिलों में बसाने का काम किया। इसलिए उनके योगदान को सदैव स्मरण रखा जाएगा। पं. लख्मीचन्द ने निम्नलिखित साँगों की रचना की है–शाही लकड़हारा, नौटंकी, सरणदे, भरथरी-पिंगला, चन्द्रहास, मीराबाई, जैमल फत्ता, अंजना देवी, सत्यवान सावित्री, हरिशचन्द्र, सेठ ताराचन्द, बहजा-सोरइ, पूरणमल, सरवर-नीर, रूपबसन्त, रघुबीर-धर्मकौर, हूर-मेनका, शकुन्तला, दुष्यन्त-चीरहरण, उखा-अनिरूद्ध, धरू-भगत, छोरे-बांगडी, हीर-रांझा, महकदे, ज्यानी चोर, चन्द्रकिरण, हीरामल-जमाल, रघबीर सिंह, पुरंजन-पुरंजनी, चापसिंह, सत्यवान-सावित्री एवं पद्मावत आदि।

पंडित लख्मीचंद द्वारा साँग के क्षेत्र में किए गए नए-नए प्रयोग संबंधी योगदानों का वर्णन निम्न प्रकार से है–

लख्मीचंद की डोली और माईचंद की ओली

पंडित लख्मीचंद और उनके शिष्यों ने अनेक साँगों की रचना तो की ही; साथ में अनेक प्रकार की लोकगायन शैलियों, रागनियों की धुन भी बनाई जिनमें डोली का नाम अग्रणी है। इसके अतिरिक्त पंडित लख्मीचंद के शिष्य माईचंद की ओली जिसको 'ओला' भी कह देते हैं, करने का अंदाज भी निराला था। तभी से यह कहा जाता है कि–'लख्मीचंद की डोली और माईचंद की ओली।'[5]

रागनियों में कलियों की संख्या, रागों एवं शास्त्रीय ज्ञान का निर्धारण

पंडित लख्मीचंद ने रागिनीयों की रचना को लेकर भी तरह-तरह के नए-नए प्रयोग किए। उन्होंने चैकलियां रागनी में दो पंक्तियों की टेक को प्रसिद्ध बनाया तथा कलियों में चार-चार पंक्तियाँ रखी। उनसे पहले चैकलियां रागनी तो गाई जाती थी लेकिन उनकी टेक या दो स्थाई की पंक्तियों का प्रचलन बहुत कम था। पंडित लख्मीचंद ने अपने साँगों की अधिकतर रागनियों में कलियों की संख्या चार बनाई। इस प्रकार उनके द्वारा चार कलियों में रचित साँग इतने लोकप्रिय तथा प्रसिद्ध हो गए कि श्रोताओं को उनकी एक-एक रागनी मुँह जुबानी कंठस्थ हो गई। इसी आधार पर पंडित लख्मीचंद के काल में रागनियों में कलियों की संख्या तथा कलियों में चार पंक्तियों के प्रचलन का पैमाना तय हो गया तथा इनके समकालीन साँग रचयिताओं ने भी इस निर्धारित मानक प्रारूप का अनुकरण किया तथा पंडित लख्मीचंद ने स्वयं अपनी रागनियों में इस तथ्य को सत्यापित भी किया। जिसका वर्णन इस प्रकार से है–

बस जा चाहे खड़ी रहो, राजी चाहे लड़ी रहो।
कहे लख्मीचंद, कली चैथी छंद की जड़ी रहो।[6]

पंडित लख्मीचंद जी ने तो अपनी रागनियों की धुन को रागों पर आधारित होने के स्पष्ट प्रमाण दिए हैं। साँग 'नौटंकी' से संकलित एक रागनी के बोल इस तथ्य को सर्वथा सिद्ध कर देते हैं–

लख्मीचंद भजो श्रीकृष्ण, तब लागेगा वो रंग बरसण

दरसन करकै परी हूर का, मिटज्या सब विश्वास
सारी रे मिलें सैं रागनी रागां मैं री री री.....[7]

इसके साथ-साथ पंडित लख्मीचंद के शास्त्रीय ज्ञान में निपुणता के भी प्रमाण मिलते हैं। इन्हें रागदारी और लयकारी की भी सच्ची समझ थी। 'चंदकिरण' साँग से संकलित इस रागिनी में पंडित लख्मीचंद ने रागों के महत्व को दर्शाया है तथा उन्हें अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार वर्गीकृत किया है–

भूप तेरे दरबार बुलाले, जितने कैद में पड़े रै,
मुलजिम दुखी और सुखी। ।। टेक।।
करूंगा जब भैरों राग सुहाग, बंद होज्यां उड़ते पक्षी काग,
मेघ राग का भी करूंगा विचार, दिखैं दिन मैं तारे लिकडे रै,
गेल्यां रात सी झुकी। ।। 1।।
चलैं जब दीपक राग के तेग, रहे ना छोटे बड़े का नेग,
गाऊंगा सारंग मेघ मल्हार, होज्यां बिच्छू सांप खड़े रै,
नागिन झोली मैं रूकी। ।।2।।[8]

पंडित लख्मीचंद जी की शास्त्रीय तालों के ज्ञान पर भी उतनी ही मजबूत पकड़ थी। जिसका वर्णन निम्न कलियों में देखने को मिलता है–

ब्रह्मा रूद्र लक्ष्मी झप ताल, गूजरी टोड़ी और जय माल,
शालवन्ट कि गेल दो चार, सुण करूं दूर झगड़े रै,
बात कोए रहै ना ल्हुकी।।। टेक।।

श्री दयाचन्द 'गोपाल' का योगदान

हरियाणवी लोकनाट्य साँग को लोकप्रिय बनाने वाले सांगियों में पंडित दयाचंद 'गोपाल' का योगदान भी महत्वपूर्ण है। जिन दिनों साँग अपने पूरे यौवन पर था, उन दिनों इनके साँगों की भी तूती बोला करती थी। श्री दयाचन्द 'गोपाल' पंडित जवाहर लाल नेहरू को बहुत मानते थे। महीने में एक बार नेहरू जी से अवश्य मिलते थे। लगभग सन् 1957 से 1964 के बीच आकाशवाणी दिल्ली के देहाती कार्यक्रम में गोपाल जी की रागनियाँ प्रसारित हुई। 18 मार्च 1988 को आकाशवाणी रोहतक में हरियाणा के कवियों के बारे में एक परिचर्चा प्रसारित की थी।[9] गोपाल जी ने इस वार्ता में भाग लेकर एक बार फिर अपने श्रोताओं तक अपने विचारों को पहुँचाया। जिन साँगों को दयाचन्द जी ने खेला-मंचित किया उनके नाम इस प्रकार हैं–पद्मावत, नौटंकी, सेठ ताराचन्द, शाही लकड़हारा, शीला सती, मीराबाई, पूरणमल, विराट पर्व, राजा हरिश्चन्द, चन्द्रकिरण, जानी चोर, सुलतान निहालदे, चाप सिंह, औरंगजेब, चंचल बाई, चीर पर्व, सभा पर्व, ध्रुव उत्तानपाद, सरवर नीर, नल-दम्पयन्ती आदि इन सभी साँगों की रागनियाँ उपलब्ध नहीं हैं।[10]

पंडित मांगेराम का योगदान

पंडित मांगेराम ने अपने गुरु पंडित लख्मीचन्द की तरह ही भरपूर मान-सम्मान प्राप्त किया। इनकी साँग-कला बेजोड़ रही है। इसकी विशेष उपलब्धि यह रही कि जिस समय साँग और साँगियों को बहुत अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता था उस समय इन्होंने ऐसे साँगों की रचना की जिन्हें बाप और बेटी भी एक साथ बैठ कर देख सकते थे। पंडित मांगेराम जी ने अपनी रागनियों में लौकिक भाषा तथा आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग इस प्रकार किया जिससे कि वे रागनियां आज तक लोगों की जुबान पर चढ़ी हुई हैं। उदाहरण के तौर पर साँग 'ध्रुव जन्म' की रागनी के बोल इस प्रकार हैं–

उमर पुराणी तेरे बिना जी डामाडोल रहें जा सै।
बीर-मर्द दुख-सुख के सांथी ढक्या ढोल रहें जा सै।। टेक।[11]

इसी प्रकार साँग 'कृष्ण जन्म' से संकलित इस रागनी में छह राग और उनकी तीस रागनियों का वर्णन किया गया है–

छः राग और तीस रागिनी वेद धुनी से गाउंगी।
मांगे राम मनैं टोहवैंगे, मैं मंदिर माँह पाऊंगी।।[12]

पण्डित चंदनलाल का योगदान

चंदनलाल जिला सोनीपत के बजाणा खुर्द गाँव के थे। ये पण्डित लख्मीचंद के शिष्य थे तथा पण्डित लख्मीचंद की मण्डली के प्रमुख कलाकार थे। चंदनलाल जी के पिता का नाम पंडित बालीराम था। इनका जन्म 1921 ई0 के करीब हुआ था। पंडित चंदनलाल जी लख्मीचंद जी के साँगों के आशिक थे। एक बार जब 12-14 वर्ष की आयु में सिटावली में चंदनलाल जी पंडित लख्मीचंद का साँग देखने गए थे तभी चंदनलाल जी के पिता ने चंदनलाल को लख्मीचंद जी को शिष्य के रुप में सौंप दिया था। उस समय 'लकड़हारा' साँग चला हुआ था तो चंदनलाल जी ने उस साँग में लकड़हारा साँग की ही रागनी गा दी। तब से चंदनलाल लख्मीचंद जी के प्रिय बन गए। चंदनलाल जी ने 2 साल तक साँगों की शिक्षा ग्रहण की, 6 साल तक छोटे रकाने पर रहे तथा फिर 8 साल तक बड़े रकाने पर रानी की भूमिका की। लख्मीचंद जी के साँगों में पंडित चंदनलाल एक नंबर पर नाचते थे दूसरे नंबर पर माईचंद और तीसरे नंबर पर सुल्तान थे। पंडित चंदनलाल बहुत सुंदर व सीधे-साधे थे। लख्मीचंद जी के साथ रहते-रहते माईचंद का नाम लख्मीचंद जी के साथ ज्यादा जुड़ा था। परंतु पंडित चंदनलाल ने अपना अलग बेड़ा बांधकर अधिक ख्याति प्राप्त की। चंदनलाल जी इतने सुंदर थे कि जब जनाना कपड़े डालकर साँग करते थे तो आशिक लड़के उनके नाचने के दौरान उनका मुंह देखने के लिए दंगल के चारों और घूमते रहते थे।[13] पण्डित चंदनलाल की मेरठ कमीशनरी तथा हरियाणा में खूब धूम मची। इनके शिष्य कर्मवीर, धर्मवीर और संतवीर ने भी बाद में अलग-अलग मण्डलियां बना ली थी।[14]

पंडित सुल्तान रोहद का योगदान

पंडित सुल्तान ने पंडित लख्मीचंद के बेड़े में रहकर चंदा इकठ्ठा करके बहुत से सामाजिक कार्य किए, जैसे–जोहड़ खुदवाने, धर्मशाला बनवाने, गौशाला बनवाने, स्कूल बनवाने आदि तथा उनको सम्पूर्ण करवाकर उम्रभर अपने संरक्षण में रखा। पंडित लख्मीचंद जी ने अपने साँगों द्वारा उम्रभर जितना चंदा इकठ्ठा किया उसमे सबसे बड़ा हाथ किसी का था तो वो था शिष्य सुल्तान का। इसके अलावा पंडित सुल्तान साधू-संतों की सेवा में उम्रभर जुटे रहे, जैसे-अपने हाथों से उनके कपडे धोना, उनकी जटाओं को निर्मल करना और आश्रमों में गौ माताओं के लिए परिश्रम करना आदि। पंडित लख्मीचंद की मृत्यु के बाद इन्होंने अपना साँग बेड़ा बाँधकर साँग-कला को आगे बढ़ाया तथा साथ ही साथ साँग के क्षेत्र में कई प्रकार के नवीन वांछित प्रयोग भी किए।[15] पंडित सुल्तान रोहद ने अपने गुरु लख्मीचंद जी के जिन-जिन साँगों का उम्रभर ज्यादातर मंचन किया, वे निम्न प्रकार से हैं–पूर्णमल, पद्मावत, राजा नल, शाही लकड़हारा, मीरा बाई, सेठ ताराचंद, राजा हरिश्चंद्र, चापसिंह-सोमवती, फूलसिंह-नौटंकी आदि।[16]

पंडित रामस्वरूप सिटावली का योगदान

पंडित रामस्वरूप जी ने लगभग दस वर्षों तक साँग किए। लेकिन दुर्भाग्यवश उनका कंठ खराब हो गया। अंत में वे साँगों को सुचारू रूप से नहीं चला पाए और उन्होंने साँग करना छोड़ दिया। पंडित रामस्वरूप जी ने अनेकों भजन, उपदेशक, ब्रह्म ज्ञान, छंद, सोरठे व साँगों की रचनाएँ बहुत ही गहराई व सरल भाषा में की है। पंडित रामस्वरूप जी के कुछ साँग लुप्त हो गए हैं फिर भी कुछ रचनाएं मिली हैं, जो इस प्रकार हैं– वनज, ब्रह्म ज्ञान, उपदेशक, चमोली आदि। उनके द्वारा बनाए गए साँग- चंदा भाई, रघुवीर कौर, धर्मपाल, शकुंतला कुमारी आदि नहीं मिले। इस प्रकार हरियाणा के लोकसाहित्य को समृद्ध बनाने वाले कलाकारों में इनका नाम सर्वोपरि है।[17]

पंडित तुलेराम का योगदान

हरियाणा सरकार की ओर से सन् 1982 में हरियाणा लोक संपर्क विभाग में साँगीत करने के लिए पंडित तुलेराम को आमंत्रित किया गया। जिसमें अन्य साँगीतकार भी आए हुए थे। सभी साँगीतकारों के एक घंटा 45 मिनट के दो-दो कार्यक्रम हुए। उनमें पंडित तुलेराम को प्रशस्ति-पत्र मिला। इन्होंने ही साँग कला को एक राज्य से दूसरे राज्यों तक प्रचारित व प्रसारित किया। हरियाणा लोक संपर्क विभाग द्वारा भी पंडित तुलेराम को दूसरे राज्यों में साँगीत का कार्यक्रम करवाने के लिए बुलाया गया। 15 नवंबर सन् 1989 को राष्ट्रपति ने इनको ताम्रपत्र, अंगवस्त्र (शॉल) तथा ₹ 25000 इनाम में दिए। 15 अगस्त सन् 1993 में हरियाणा सरकार ने पंडित तुलेराम को स्टेट अवार्ड दिया।[18]

करण सिंह का योगदान

करण सिंह ने जब साँग करना शुरू किया उस समय इनकी आयु 10 वर्ष की थी। फिर ये 20 साल तक साँग करते रहे। 31 वर्ष की आयु में इन्होंने अपना अलग बेड़ा बाँध लिया। तत्पश्चात 12 साल तक साँग किए। फिर 14 साल तक रोहतक रेडियो स्टेशन में पार्टी के साथ रागनी-भजन गाते थे। पार्टी का नाम था-करण सिंह साँगी एवं पार्टी। इन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन साँग-कला के लिए समर्पित कर दिया तथा आज भी अपनी साँग-कला से हरियाणवी लोकसंस्कृति को सिंचित कर रहे हैं।[19]

पंडित जगदीश चंद्र वत्स का योगदान

पंडित वत्स जी के लोकनाट्यों (साँगों) का वर्गीकरण करना दुधारी तलवार की धार पर चलने के समान है। उनके काव्य में वीर और हास्य रस के साथ-साथ करुण रस भी शामिल है। उनके लोकनाट्यों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से है–

(क) धर्म एवं नीति प्रधान लोकनाट्य (साँग)

धर्म एवं नीति प्रधान सांग निम्न हैं–1. राजा हरिश्चंद्र, 2. सत्यवान-सावित्री, 3. नल-दमयंती, 4. श्रवणभक्त, 5. आदि-पर्व महाभारत, 6. द्रोपदी-स्वयंवर, 7. द्रोपदी चीरहरण, 8. विराटपर्व, 9. गऊ-हरण, 10. भर्तृहरि पिंगला, 11. गीताज्ञान. 12. अम्ब-अम्बली।

(ख) पौराणिक लोकनाट्य (साँग)

पौराणिक सांग निम्न हैं–1. ध्रुव भक्त उत्तानपाद, 2. पवनकुमार-अंजना, 3. विश्वामित्र-हुर मेनका, 4. शकुंतला-दुष्यंत, 5. श्रीकृष्ण जन्म, 6. लवकुश-काण्ड, 7. देवयानी-शर्मिष्ठा, 8. शुक्राचार्य-कच्छ, 9. चंद्रहास-विषया।

(ग) श्रृंगार एवं प्रेम प्रधान (काल्पनिक) लोकनाट्य (साँग)

श्रृंगार एवं प्रेम प्रधान सांग निम्न हैं–1. राधा-कमला, 2. बीरमति-जगदेवपवार, 3. शशिकला-उदयभान, 4. मदनरेखा-दीपरमण, 5. चंद्रप्रभा-मदनसेन, 6. धर्मपाल-शांता, 7. चंद्रदेव-सुशीला, 8. विजयपाल-प्रेमवती, 9. उषा-अनिरुद्ध, 10. मैना बाई, 11. सुंदरबाई-बीरसिंह।

(घ) ऐतिहासिक लोकनाट्य (साँग)

ऐतिहासिक सांग निम्न हैं–1. नरसी भक्त, 2. कालिदास-विद्योतमा, 3. विद्याधर-भारवि, 4. हकीकतराय, 5. चंद्रगुप्त-शहजादी, 6. नेताजी सुभाष चंद्रबोस, 7. चापसिंह-सोमवती, 8. अजीत सिंह-राजबाला, 9. चंचल कुमारी-राजसिंह, 10. राजीव हत्या।

पंडित जगदीश चंद्र वत्स काव्यकला में निष्णात थे। इनके साँगों में भजन, लावणी, दोहा, रागिनी, चबोला, काफिया, सवैया, मंगल, आनंदी, ख्याल, शेरो-शायरी, कव्वाली तथा बहरे-ए-तबील आदि का बहुत प्रयोग हुआ है। जिनका वर्णन निम्न प्रकार से है–

1. दोहा–24 मात्राएँ (13, 11) यति।
2. चबोला–28 मात्राएँ, चार चरण, तुकान्त।
3. काफिया–30 मात्राएँ, तीन चरण, तुकान्त संवाद योजना में सहायक।
4. सवैया–22-26 वर्ण, चार तुकान्त चरण।
5. रागिनी–हरियाणा के साँगों का सर्वाधिक मनमोहक एवं लोकप्रिय छंद है। राग रागिनी (हरियाणा रोहतक शैली) मनुष्य की रागात्मक वृतियों की रंजिका होने के कारण ही यह 'रागिनी' कहलाती है।
6. गजल–गजल हृदय की अनुभूति की सूक्तिमय शैली है, जिसकी अपनी निजी भाषा, निजी भाव, निजी उपमाएँ एवं निजी अलंकार होते हैं, गजल गागर में सागर भरती हैं।[20]

निष्कर्ष

निष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता है कि हरियाणवी लोकसंगीत में साँग विधा का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। पंडित मानसिंह एवं उनकी परंपरा के शिष्यों ने एक लम्बे समय तक इस विधा को जीवंत रखकर इसमें

अपना अमूल्य योगदान दिया तथा इसके माध्यम से लोगों का भरपूर मनोरंजन किया। परन्तु मनोरंजन के अत्याधुनिक साधनों के चलते अब साँग प्रायः लुप्तप्राय होते जा रहे हैं। अतः हरियाणवी संस्कृति एवं सभ्यता के संरक्षण हेतु साँग विधा को पुनः जीवित करने की अत्यन्त आवश्यकता है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इसके महत्व को जानकर इसके सरक्षण एवं संवर्धन में अपना योगदान दे सकें।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

1. भीम सिंह मलिक (1981), हरियाणा का लोक साहित्य एवं सांस्कृतिक सन्दर्भ, पिलानीः चिंता प्रकाशन।
2. पूर्णचन्द शर्मा (1983), हरियाणा की लोकधर्मी नाट्यपरम्परा का आलोचनात्मक अध्ययन, चण्डीगढ़ः हरियाणा साहित्य अकादमी।
3. डॉ. राममेहर सिंह (2012), हरियाणवी साँगीत का उद्भव एवं विकास, पंचकूलाः हरियाणा ग्रंथ अकादमी।
4. डॉ. राजेन्द्रस्वरूप वत्स, साँगसम्राट पंडित लख्मीचन्द, पृ. 18
5. डॉ. शंकरलाल यादव (2000), हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, इलाहाबाद, हिन्दुस्तान अकादमी।
6. रधुवीर सिंह मथाना (1993), हरियाणा लोकनाट्य-परम्परा एवं कवि शिरोमणि पंडित मांगेराम, रोहतकः लक्ष्मण साहित्य प्रकाशन।
7. हरिगन्धा, हरियाणा साहित्य विशेषांक, सितम्बर-दिसम्बर, 1988, पृ. 123-126
8. पंकज शर्मा प्योदा, संकलनकर्ता, कविराज पंडित रामस्वरूप जी की जीवनी, पृ. 28
9. सन्दीप कौशिक, कवि शिरोमणि रधुनाथ कवितावली, भिवानी, पृ. 41
10. धीरेन्द्र वर्मा (1958), हिन्दी साहित्य कोश, सम्पादक, प्रकाशन ज्ञानमंडल लिमिटेड, बनारस, पृ. 751
11. पंडित बलबीर शर्मा जी से दिनांक 17 जून 2022 के साक्षात्कार के आधार पर संकलित।
12. श्री दिलावर शर्मा जी से दिनांक 28 दिसम्बर 2021 के साक्षात्कार के आधार पर संकलित।
13. चंदनलाल जी के शिष्य साँगीतकार करण सिंह से दिनांक 23 दिसम्बर 2021 के साक्षात्कार के आधार पर संकलित।